हिंदी फिल्मों में अभिव्यक्त लोक जीवन :

(विशेष संदर्भ : मदर इंडिया, तीसरी कसम, नदिया के पार)

एम.फिल.- (नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग) सत्र:2012-2013
हेतु प्रस्तावित
लघु शोध प्रबंध की अनंतिम रूपरेखा

शोध निर्देशक

शोधार्थी
अमरेन्द्र प्रताप सिंह
एम.फिल फिल्म 2013
नाट्यकला एवं फिल्म विभाग अध्ययन

लोक जीवन का स्मरण करते ही हमारे जेहन में गाँव देहात की तमाम स्मृतियाँ दौड़ने लगती हैं। हमारे देश भारत की अधिकांश जनता गांवों में निवास करती है। हमारे गाँव अपने स्वरूप में भोले-भाले, प्रकृति के गहनों से लदे, खेत खलिहानों से आबाद, पशु-पक्षियों से गुंजारित, रिश्तों की मिठास से सिक्त, हवा, पानी, धरती, आकाश सभी का समान प्रेम प्राप्त करते उत्सव की माला से लगते हैं।

सभी कलाओं की तरह सिनेमा ने भी अपने प्रारम्भिक चरण से ही लोक जीवन की तरफ अपना ध्यान आकर्षित किया और इसने अपने आप को लोक जीवन के आंचल में अपनापन महसूस करते हुए समय समय पर फिल्मों से लोक की शानदार छवियाँ पर्दे पर उभारी। लोक परिवेश से आए हुए विभिन्न फ़िल्मकारों ने सिनेमा में लोक जीवन की समस्याओं, लोक जीवन के रंग बिरंगे स्वरूपों, लोक संगीत, लोक भाषा, को पर्दे पर उतारा। लोक जीवन की परदे पर उतरी सशक्त फिल्म में से मदर इंडिया का नाम उभर कर सबसे पहले आता है। इस फिल्म में जहां पर अपनी माटी, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति के प्रति प्रेम दिखाया गया है वहीं पर एक ग्रामीण स्त्री के साहस और संघर्ष की मजबूत मिशाल भी पेश की गई है। स्त्री के दायित्व और नारीत्व को दर्शाती ऐसी सशक्त फिल्म हिन्दी सिनेमा में दूसरी नहीं दिखाई देती है।

हिन्दी के मशहूर आंचलिक कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'मारे गए गुलफाम उर्फ तीसरी कसम' पर बनी फिल्म 'तीसरी कसम' गाँव के भोले-भाले गाड़ीवान हीरामन और नौटंकी बाई हीराबाई के पनपे मासूम अनाम रिश्ते की अमिट कहानी है। हीरामन के खाये तीसरे कसम का उसके जीवन में बहुत मायने है क्योंकि यह कसम पहले दूसरे कसमों जैसी नहीं है, यह कसम उसके जीवन, हृदय के आवेग, उसके खयाल

उसके शुकुन सब के छिन जाने से क्रोधवश उमड़ी कसम है जिसको खाने के बाद भी मन और तन की सिहरन बार-बार बनी हुई है।

वहीं पर केशव प्रसाद मिश्र के लघु उपन्यास ‘कोहबर की शर्त’ पर बनी फिल्म ‘नदिया के पार’ ग्रामीण परिवेश की पूरी संस्कृति को दिखलाती है। इसमें पूर्वी उत्तर प्रदेश के शादी-ब्याह के संस्कार, खेती-बाड़ी, सोहर-फाग जैसी छोटी-छोटी चीजों को बहुत ही सशक्तता से दिखाया गया है। इस फिल्म में लोक जीवन की चुहलबाज़ियाँ हैं । संवादों में तुनकपन, मठेठपन, अल्हड़ता है।

लोक आधारित फिल्मों में इन तीनों फिल्मों का अपने विषयानुरूप, अपने लोक रंग, अपनी प्रस्तुति, सांस्कृतिक परिवेश के साथ लोक की छोटी-छोटी चीजों का भी दर्शन होता है। जो जमीन से जुड़ें लोगों को सहज आकर्षित करता है।

प्रस्तावना:

अपनी माटी और माँ से अनुराग किसे नहीं होता जिन धूल धूप में खिल खेल कर हमारे जीवन में राग-रंग पाया, अपने को संयोजित किया उसके बारे में चर्चा करना, उपन्यास लिखना, फिल्में बनाना अर्थात कोई भी काम वह हर बंदा करना चाहेगा जो अपनी माटी से दूर जा चुका है या होगा, जिसे अपने उस लोक की याद आते ही तड़पन या हूक उठने लगती है। कुछ ऐसी ही हूक या तड़प की बेताबी को सिनेमा के माध्यम से महबूब खान, शैलेंद्र और गोविंद मोनिस जैसे इन फिल्मों के निर्माताओं ने अभिव्यक्त कर करोड़ों भारतियों के दुखते रग पर जैसे हाथ सा रख दिया है। करोड़ों को अनुरक्त कर दिया।

प्रस्तुत लघु प्रबंध में हम इन फिल्मों को अध्ययन की सुविधा की दृष्टिकोण से लोक से चलते हुए फिल्मों पर आकर उनमें उपस्थित लोक जीवन के तत्वों की छानबीन गहराई से करेंगे।

प्रथम अध्याय में हम लोक जीवन की अवधारणा एवं उसके स्वरूप पर बात करते हुए लोक संस्कृति, लोक गीत-संगीत-नृत्य, लोक भाषा, पर प्रकाश डाला जाएगा ।

द्वितीय अध्याय में इन्हीं बिंदुओं के आलोक में स्वतन्त्रतापूर्व और स्वतन्त्रता पश्चात की फिल्मों पर चर्चा होगी ।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत- मदर इडिया, तीसरी कसम, नदिया के पार के लोक जीवन का लोक संस्कृति, लोक गीत-संगीत-नृत्य, लोक भाषा, के आलोक में अध्ययन होगा।

उद्देश्य:

प्रस्तावित लघु शोध प्रबंध में लोक जीवन को अभिव्यक्त करती फिल्मों का अध्ययन लोक सापेक्ष ढंग से होगा जिससे लोक के विभिन्न आयाम उभर कर सामने आ सके। इन फिल्मों में उपस्थित वे कौन से तत्व हैं जो इन फिल्मों को लोक की सशक्त अभिव्यक्ति बना देते है इसको दिखाना हमारा ध्येय होगा। आने वाले भविष्य में शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए यह लघु शोध कार्य सहायक बन सके यह इस शोध कार्य की सार्थकता होगी।

शोध प्रविधि-

प्रस्तावित लघु शोध प्रबंध एक अंतरानुशासनिक विषय से आबद्ध है, एक ओर सिनेमा और उसकी तकनीक दूसरी ओर लोक जीवन और उसकी संस्कृति ये दोनों मिल कर इसे व्यापक फलक प्रदान करते है।

अत: समाज वैज्ञानिक शोध प्रविधि के आलोक में लोक आधारित फिल्मों का विश्लेषनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

संभावित अध्याय योजना

अध्याय – 1 लोक जीवन की अवधारणा एवं स्वरूप

1.1 लोक-संस्कृति

1.2 लोक-गीत ,संगीत ,नृत्य/नाट्य

1.3 लोक-भाषा

अध्याय – 2हिंदी फिल्में और लोक जीवन

2.1 स्वतंत्रता के पूर्व की हिंदी फिल्मों में लोक जीवन

2.2 स्वातंत्र्योत्तर हिंदी फिल्मों में लोक-जीवन

अध्याय – 3मदर इंडिया ,तीसरी कसम ,नदिया के पार में लोक जीवन

3.1- मदर इंडिया

3.1.1 लोक-संस्कृति

3.1.2 लोक-गीत नाट्य/नृत्य, संगीत,

3.1.3 लोक-भाषा

3.2- तीसरी कसम

3.2.1 लोक-संस्कृति

3.2.2 लोक-गीत नाट्य/ नृत्य, संगीत,

3.2.3 लोक-भाषा

3.3 नदिया के पार

3.3.1 लोक-संस्कृति

3.3.2 लोक-गीत नाट्य/ नृत्य, संगीत,

3.3.3 लोक-भाषा

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, प्रह्लाद, कवि शैलेंद्र- जिंदगी की जीत में यकीन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण -2005
2. इन सायक्लोपीडिया ब्रितानिका, लंदन, भाग- 4
3. उपाध्याय, कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, संस्करण-2008
4. उपाध्याय, राम नारायण, लोक साहित्य समग्र, हिन्दी प्रचार पब्लिकेशन प्रा.लि., वाराणसी, प्रथम संस्काण-1997
5. कुमार हरीश, सिनेमा और साहित्य, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2012
6. चढ़्ढ़ा, मनमोहन, हिन्दी सिनेमा का इतिहास, सचिन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-1990
7. जैन, शांति, लोक-गीतों के संदर्भ और आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण-1997
8. दइया, पीयूष (संपा), लोक, भारतीय लोक कला मण्डल, उदयपुर, प्रथम संस्करण-2002
9. दुबे, विवेक, हिन्दी साहित्य और सिनेमा, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2009
10. दुबे, श्याम सुंदर, लोक-परंपरा पहचान एवं प्रवाह, राधा-कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2004
11. द्विवेदी, देव नारायण(संपा), घाघ भट्टरी, पिलग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी, प्रथम संस्करण-2006
12. पारख, जवरीमल्ल, हिन्दी सिनेमा का समाजशास्त्र, शिल्पी प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006
13. प्रसाद, कमला, फिल्म का सौन्दर्यशास्त्र और भारतीय सिनेमा, शिल्पायन, दिल्ली, संकरण-2010
14. प्रसाद, दिनेश्वर, लोक-साहित्य और संस्कृति, जयभारती प्रकाशन, इलाहबाद, द्वितीय संस्करण-2007
15. बाहरी, हरदेव, हिन्दी शब्द कोश, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली, तेरहवाँ संस्करण-1999
16. भारद्वाज, विनोद, सिनेमा कल आज कल , वाणी प्रकाशण, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006
17. मिश्र, विद्यानिवास, लोक और लोक स्वर, प्रभात प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण-2000

18.मृत्युंजय (संपा), सिनेमा के सौ बरस, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण-2008
19.रामकृष्ण, फिल्मी जगत में अर्धशती का रोमांच, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2006
20.वर्मा, धीरेंद्र (संपा), हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी, संस्करण-2000
21.शर्मा, हरद्वारी लाल, लोक-वार्ता विज्ञान, खंड-एक, दो, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, प्रथम संस्करण-1990
22.सत्यार्थी, देवेंद्र, धरती गाती है, हंसराज, प्रकाशन, दिल्ली, सन 1951

पत्र पत्रिकाएँ-

1. ओझा, सीमा (संपा), आजकल (सिनेमा के सौ बरस), आजकल प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, अक्टूबर2012 -
2. कुमार, मनोज (संपा), समागम (सिनेमा सौ साल), शिवाजी नगर, भोपाल-16, अंक-1, फरवरी-2012
3. दिवेदी, अशोक (संपा), पाती (लोक संकृति/साहित्य अंक) दिसंबर-1995, अंक-14-15, बलिया
4. नागर, विष्णु (संपा), शुक्रवार (फिल्म विशेषांक), नोएडा, अंक-52, 27 अप्रैल से 3 मई, 2012
5. प्रसाद, कमला(संपा), वसुधा, निरालानगर, भोपाल, सिनेमा विशेषांक-2012
6. यादव, कालीचरन(संपा), मड़ई (99), अंक-1, वर्ष-1, विलासपुर
7. यादव, राजेन्द्र (संपा), हंस (हिन्दी सिनेमा के सौ साल), अक्षरा प्रकाशन, नई दिल्ली, अंक-7, फरवरी-2013
8. राय, ऋत्विक (संपा), लमही (सिनेमा विशेषांक), विवेक खंड, लखनऊ, अंक-1, जुलाई-सितंबर 2012
9. वर्मा, रामकुमार (संपा), हिंदुस्तानी (संस्कृति अंक-लोक), जुलाई1984-दिसंबर-, अंक3-,4, भाग4-,5, इलाहाबाद

10. सिंह, रामधारी ‘दिवाकर’(संपा), परिषद पत्रिका (संस्कृति अंक-लोक), अप्रैल 1997 -से मार्च1998 -,अंक4-1-, पटना

वेबसाइट

www.wikpidiya.com

www.hindcinema.com

www.hindigaane.com

www.pksongs.com